साधनों का आध्यात्मिक स्वरूप

ब्र.कु.श्वेता, शान्तिवन

आज विभिन्न प्रकार के संदेशवाहन के साधन मौजूद हैं। विश्व के एक कोने में बैठा व्यक्ति दूसरे कोने के व्यक्ति से बात कर सकता है। लेकिन एक ही घर में रहने वाले दो व्यक्ति अजनबी बन गये हैं। देशों की दूरियाँ तो घट गई हैं लेकिन दिलों की दूरियाँ बढ़ गई हैं। इस दूरी को कम कैसे किया जाये। आज साधन तो हैं मनुष्य के पास लेकिन शान्ति के लिए वह भटक रहा है, सच्चे प्यार के लिए भटक रहा है। कारण यही है कि उसने अपने आपको साधनों का गुलाम बना दिया है। साधनों को मालिक की तरह प्रयोग करने के बजाय साधन उसका मालिक बन गये हैं। साधनों के वशीभूत हुए आज के मानव को आध्यात्मिक पथ प्रदर्शन की आवश्यकता है। प्रस्तुत नाटिका में साधनों के परस्पर संवाद, विवाद और उनसे उपजी समस्याओं के आध्यात्मिक समाधान को बहुत ही सरस, सरल और रुचिकर शैली में प्रस्तुत किया गया है। यह सभी मानवों को यह संदेश देता है कि हम साधनों के प्रति आध्यात्मिक दृष्टिकोण विकसित करें और आध्यात्मिक रूप से उन्हें उपयोगी बनायें तभी हम सच्ची सुख, शान्ति का अनुभव कर सकेंगे और एक श्रेष्ठ समाज का निर्माण भी संभव होगा। तो लीजिये प्रस्तुत है प्रेरणादायी आध्यात्मिक नाटिका 'साधनों का आध्यात्मिक स्वरूप'।

(मीडिया के विभिन्न साधन – मोबाइल, लैपटोप, टेबलेट, इंटरनेट कनेक्शन, रेडियो, टीवी के मध्य झगड़ा हो रहा है 'मैं बड़ा', 'मैं बड़ा')

(ब्रह्माकुमारी बहन का प्रवेश)

ब्रह्माकुमारी :
अरे, किस बात पर झगड़ रहे हो
क्यों व्यर्थ ही एक-दो पर बिगड़ रहे हो?

टेबलेट:
हे देवी,
आपका करते हैं हम बहुत सम्मान
कृपया हमारी समस्या का करो समाधान
बताओ, कौन है हममे सबसे महान
जिसने बनाया जीवन को आसान

ब्रह्माकुमारी :
तुम बारी-बारी रखो अपनी बात
तभी मैं जान पाऊँ तुम्हारी करामात
अपनी-अपनी श्रेष्ठता का करो बखान
ताकि मुझको निर्णय करना हो आसान

मोबाइल:
मेरी महिमा है अपरंपार,
मैं हूँ जीवन का आधार।
मेरे बिना चले ना काम एक पल
मच जाये जीवन में हलचल
काम वाली बाई से मिनिस्टर तक
बच्चे, बुढे का मैं ही सहारा
युवा दिलों को सबसे प्यारा
दो दिलों को मिलाना हो या डालनी दिलों में दरार
मेरी महिमा है अपरंपार, मेरी महिमा है अपरंपार

ब्रह्माकुमारी :
तुमने अपनी बात रखी
अब सुनो जरा मेरे भी विचार
मैं बताती हूँ कि कैसे अध्यात्म से
कर सकते हो तुम अपना सुधार
और साथ-साथ मानव जाति का बहुत परोपकार

ब्रह्माकुमारी (मोबाइल से):
निश्चित ही तुमने मीलों की दूरी मिटाई है
और दुनिया जैसे मुट्ठी में सिमट आई है
पर नहीं किसी काम के तुम बिना टावर के
और ना ही तुम चल सकते हो बिना पावर के
कभी भी खत्म हो सकता तेरा खेल है
इसलिए बिना टावर और पावर के तू बिल्कुल फेल है
परमात्मा जिसका टावर है

पवित्रता जिसकी पावर है
ऐसी पावर से जो अपने मन को शक्तिशाली बनायेगा
उसका शक्तिशाली मन ही एक मोबाइल बन जायेगा
सुख-शांति के प्रकंपन वो हर आत्मा तक पहुँचायेगा
अंत में ऐसा मन रूपी मोबाइल ही काम आयेगा।

लैपटोप:
मैं हूँ लेपटोप
सबमें हूँ टोप
मैंने है सबके दिलों में जगह बनाई
लोगों ने भारी भरकम फाइलों से मुक्ति पाई
घंटों का काम पल में निपटाता
संकल्प, समय, शक्ति को बचाता
इसलिए लोग करते मुझे पसंद
सफर में भी रखते अपने संग

ब्रह्माकुमारी (लैपटोप से):
नाम तेरा लैपटोप है
तुझे लैप में जो रखता
समझता वो खुद को टोप है
माना कि तू समय को बचा सकता है
पर क्या व्यर्थ को समर्थ बना सकता है?
नहीं-नहीं, तुझे तो नहीं इसकी कुछ पहचान है
तू किसी को महान बना सके, तभी तो तू महान है
कर लो एक ऐसे लैपटोप की पहचान
जो जीवन को सचमुच बना देता है महान
परमात्म प्यार की गोद में समा जाओ
ये लैप सबसे टॉप है,
पल-पल सफल हो जायेगा,
इसमें व्यर्थ का ना कोई स्कोप है

टेबलेट:
अरे हट-हट, पुराने मॉडल,

अब तो मेरा ही जमाना है,
तेरा मॉडल तो बहुत पुराना है
मुझे ही सबसे आगे जाना है
नहीं मैं किसी बात में किसी से कम
तुम दोनों जितना है मुझमें दम।
ऐसा मैंने दुनिया में रंग जमाया है
विस्तार को जैसे सार में समाया है
नये दौर, नये जमाने की मैं पहचान हूँ
दिखने में भी स्लिम, स्मार्ट हूँ, इसलिए महान हूँ।

ब्रह्माकुमारी (टेबलेट से):
टेबलेट, सचमुच तेरी शान निराली है
जितना तू छोटा है, उतना ही शक्तिशाली है
अगर वही शक्तिशाली है
जिसका छोटा आकार है
तो फिर सबसे शक्तिशाली रूप तो निराकार है
टेबलेट सा स्वरूप है
आत्मा बिंदु रूप है
सर्वशक्तियों का सिंधु
इस बिंदु में पाया है
बिंदु रूपी टेबलेट में
सुख का सार समाया है

इंटरनेट :
मेरे बिना तुममें से किसी का काम न चलता है
तुम्हें उपयोगी बनने के लिए मुझसे ही जुड़ना पड़ता है
मैं ज्ञान का भण्डार हूँ
मैं सबका सूत्रधार हूँ
मैं जीवन सरल बनाता हूँ
मैं इंटरनेट अवतार हूँ
आज दुनिया मेरी मुट्ठी में
महिमा में अपरंपार हूँ
मैं इंटरनेट अवतार हूँ ...मैं इंटरनेट अवतार हूँ....

योगी (इंटरनेट से):
माना इस कलियुग में तुम
सूचना का भण्डार हो
तुम इंटरनेट अवतार हो
तुमसे जुड़कर मानव
खुद को जगत से जुड़ा पाता है
पर वायरस के खतरों से भी
नहीं बचा रह पाता है
तुम्हारी दुनिया में वह इतना मगन हो जाता है
कि उस जगतपिता से संबंध टूटता जाता है
सबको प्रभु से जोड़ने का
अब कर्त्तव्य निभाओ तुम
उस सुप्रीम सर्वर का
आई.पी. एड्रेस बन जाओ तुम
प्रेम, एकता का जब दिलों में इंटरनेट बन जायेगा
मन से मन के तार जुड़ेंगे, मानव देव कहलायेगा।

रेडियो:
सदियों से दुनिया में मानते मुझे
रेडियो आकाशवाणी नाम से जानते मुझे
कान लगाकर मेरी बात सुनते
भला इतना रिस्पेक्ट किसका रखते
सस्ता, सहज, सुलभ साधन मैं
गाँव-गाँव तक पहुँच बनाऊँ
अनपढ़, भोले-भाले लोगों को
समझदार जागृत कर दिखाऊँ
भले साइंस वाले करते जायें
कितने भी आधुनिक आविष्कार
पर मैं हूँ ओल्ड सो गोल्ड
मेरा महत्व रहे सदा बरकरार।

ब्रह्माकुमारी (रेडियो से):
हे आकाशवाणी नाम वाले

अब ईश्वरीय वाणी का दो पैगाम
आबू में भगवान आये हैं
दे रहे सच्चा गीता ज्ञान
सोए हुए धरती वालों की चेतना को
जब तक जगाया नहीं
सच मानो तुम्हारा आकाशवाणी नाम
फायदा किसका कर पाया नहीं
हे जन-जन के प्रिय
अब ऐसी जागृति तुम्हारे से आये
हर जन कृष्ण सा हो, हर गाँव गोकुल बन जाये।

दूरदर्शनः
जब पैदा नहीं हुए तुम सब
तब से मैं हूँ।
अश्लीलता से दूर हूँ
देश का गुरूर हूँ
हर गाँव, कस्बे तक पहुँचता हूँ।
सबके लिए सहज सुलभ सस्ता हूँ
ज्ञानवर्धक कार्यक्रम दिखाता
बच्चों, बड़ों का ज्ञान बढ़ाता।
घटिया सीरियलों से कोसो दूर हूँ,
मैं दूरदर्शन बड़ा मशहूर हूँ..
मैं दूरदर्शन बड़ा मशहूर हूँ।

योगी (दूरदर्शन से):
दूरदर्शन तुम बनो दिव्य दर्शन
दैवी दुनिया का कराओ दिग्दर्शन
दूर रहे जो अब उन्हें पास लाओ
दूरियाँ दिलों की तुम मिटाओ
एक पिता के बच्चे,
हम सभी हैं एक
सच्चाई के पथ पर चलें
और बनें नेक
यह संदेश घर-घर फैलाओ

भूले-भटको को राह दिखाओ

प्राइवेट टीवी चैनल्स:
अरे जा जा पुराने ढोल
खोल देता हूँ अभी तेरी पोल
तू तो अब ओल्ड फैशन है
व्यर्थ झाड़ रहा भाषण है
लोग करते हैं हमें अभी पसंद
तुम तो हो पुराने बेढ़ंग
मनोरंजन तो हम कराते
लोगों की पसंद का सब दिखाते
नई खबरे और जानकारियों का भंडार
हमारी मुट्ठी में है सब संसार..
हमारी मुट्ठी में है सब संसार

ब्रह्माकुमारी (टीवी चैनल्स से):
माना तुम कराते हो मनोरंजन
पर हो रहा उससे नैतिक पतन
विज्ञापनों ने व्यर्थ इच्छायें भड़काई,
इसी ने तो सारी आग लगाई
मन की शांति और स्थायी खुशी
घटिया बातों से मिल सकती नहीं
अब करो अच्छी बात, सच्ची बात
देखो बीत रही कलियुग की रात
सतयुग स्थापना के दिव्य नजारे
देख पायें अब तुमसे सारे
मिलकर तुम करो यही प्रयास
बुझे सबकी प्रभु मिलन की आश
सदाचारी समाज का करो निर्माण
तब तुम चैनल्स का होगा गुणगान

अंत में सभी मिलकर
आओ हम सब मिलकर, एक सुखमय संसार बनायें

साधन नहीं, साधना को जीवन का आधार बनायें
एक पिता के बच्चे हम, जग को एक परिवार बनायें
मिलकर सुखमय संसार बनायें
मिलकर सुखमय संसार बनायें .....

(सबमें हो सहयोग भावना..सबका सबसे प्यार...)